ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2019; SP7: 68-69

डा० प्रियंका कुमारी
इतिहास विभाग, ल.ना.मि.वि.वि.,
दरभंगा, बिहार भारत.

Correspondence
डा० प्रियंका कुमारी
इतिहास विभाग, ल.ना.मि.वि.वि.,
दरभंगा, बिहार भारत.

(Special Issue-7)
"International Conference on Science and Education: Problems, Solutions and Perspectives"
(3rd June, 2019)

यूरोप का समाजशास्त्रीय अध्ययन

डा० प्रियंका कुमारी

सारांश
मध्यकाल के दौरान यूरोप में जिस समाज का विकास हुआ यह पहले की अपेक्षा कुछ नवीनता लिए हुए था। मध्यकालीन वर्ग तथा सामान्य जन। किन्तु शासक वर्ग का अतिरिक्त महत्व था। मध्यकालीन यूरोपीय समाज में सबसे उच्च वर्ग शासक वर्ग था जिसमें राजा, राजकुमार तथा प्रशासन से सम्बन्धित सभी छोटे–बड़े अधिकारी शामिल थे। सत्ता राजा के हाथों में थी। उसकी आज्ञा का पालन किया जाता था और उसके आदेश स्वीकार किये जाते थे। कैरोलिजियन समाज के पतन के पश्चात राजा का प्रभाव घट गया था और राजपद की गरिमा जाती रही थी। राजाओं के स्थान पर सामंत सत्ताधारी हो गए थे। बाद में सामंतो का महत्व घटने लगा और रववंश का विकास हुआ। अब राजा का महत्व एवं प्रभाव फिर बढ़ गया। इस काल में सत्तधिकार के प्रश्न को लेकर राजा तथा चर्च के बीच लम्बे काल तक संघर्ष चलता रहा। अन्त में राजपद की श्रेष्टता को स्वीकार कर लिया गया। शासक वर्ग समाज में काफी प्रतिष्ठित थे। राजा ईश्वर का प्रतिरूप समझा जाता था और अपने दैवीय अधिकर के बल पर शासन करता था। जो शासक वर्ग के लोग थे उनका जीवन समाज के अन्य वर्ग से काफी अलग था। इनमें विलासिता अधिक थी। यये विभिन्न प्रकार की सुविधाओं से सम्पन्न थे।

Keywords: मध्यकालीन वर्ग तथा सामान्य जन, समाजशास्त्रीय अध्ययन

प्रस्तावना
राजा के बाद सर्वाधिक महत्व पादरी का होता था जो ईश्वर की सेवा के साथ–साथ जन–सामान्य की मुक्ति के लिए प्रयत्नशील रहता था। मध्यकालीन यूरोपीय समाज पर पादरी ऋऋ वर्ग का गहरा प्रभाव पड़ा था और यूरोप में प्रायः सभी जगह गिरजाघर थे। गाँवों का गिरजाघर ग्राम–जीवन का प्रमुख केन्द्र था। यह न केवल उपासना–गृह था बल्कि चौक बाजार का सर्वाधिक आकर्षक स्थल भी था। पादरी वर्ग का धार्मिक और गैर–धार्मिक दोनों क्षेत्रों पर प्रभाव पड़ा था। अनेक पादरी बड़े भू–स्वामी भी थे। दूसरे सामंतों के समान बड़े पादरियों द्वारा जनता से कर वसूला जाता था तथा सैन्य सेवा के स्थान पर धन लिया जाता था। छोटे सामंत अक्सर पादरियों से कर्ज लेते रहते थे। बड़े पादरी राजाओं के परामर्शदाता भी होते थे। इस प्रकार इनका राजनीतिक प्रभाव भी गहरा था। बड़े पादरियों का जीवन सामन्तों की भाँति विभिन्न प्रकार की सुविधाओं से युक्त था। परन्तु अधिकांश पादरी जो पुरोहित का काम करते थे, उनकी स्थिति बड़े पादरियों से बिल्कुल भिन्न थी।

पादरी के ऊपर किसानों व शिल्पियों के शिक्षित पुत्र की नियुक्ति की जाती थी। उन्हें चर्च में पूजा–पाठ का काफी काम करना पड़ता था, किन्तु उनका वेतन बहुत ही कम था। उनके ज्ञान का स्तर भी सामान्यतः नीचा होता था। इनमें से अधिकांश किसानों की तरह ही रहते थे। उन्हें खेत–खलिहान में काम करने के अलावा अपने धार्मिक कर्तव्यों को भी निभाना पड़ता था। जन्म, विवाह तथा मृत्यु से सम्बद्ध संस्कार उनके बिना नहीं होते थे। इसके बावजूद भी जिस सम्मान के वे हकदार थे नहीं प्राप्त उन्हें होता था। छोटे पादरियों का जीवन गरीबी के कारण कुछ अनैतिक भी हो गया था। उनमें से कुछ गिरजाघरों के पूजा–पात्रों तक को किसी दूसरे के हाथ बेच कर अपनी जरूरत पूरी करते थे।

पूरा यूरोप अंधिविश्वास के अभाव में आ गया था। ग्रामीणों के लिए तो धर्म और चमत्कार में अभिन्न सम्बन्ध था। बुद्धिमान और गम्भीर पादरी निःसंदेह अज्ञान, अंधविशस तथा चमत्कार के विरोधी थे, किन्तु उनका प्रभाव सीमित था। फिर भी चर्च ज्ञान, कला, चिकित्साशास्त्र तथा कानून का संरक्षक था। जो लागे गरीब तथा रोगग्रस्त हुआ करते थे उन्हें चर्च का काफी सहयोग मिलता था और चर्च

वैज्ञानिकों, चिकित्सकों, लेखकों तथा विद्वानों को आश्रम देता था। आमतौर पर ये कार्य चर्च द्वारा नहीं बल्कि मठों के द्वारा सम्पादित किये जाते थे। ईसाई मठ आत्मनिर्भरता के प्रतीक थे। मठीय जीन काफी अनुशासित एवं व्यस्त होता था। यद्यपि इसमें भी काफी कमियां थीं, फिर भी मध्यकालीन यूरोपीय जनजीवन को ईसाई मठों तथा भिक्षुओं ने निर्धारण किया। पादरी अच्छे–बुरे दोनों तरह के थे। तत्कालीन यूरोप में यह वर्ग एक विशिष्ट वर्ग था। सामन्त वर्ग चर्च एवं समाज की शत्रुओं से रक्षा करता था। सामंतों का प्रभाव इस लोकोक्ति से स्पष्ट हो जाता है कि श्राजा शासन करता है, चर्च भजन–भाजन करता है, सामंत न्याय करता है।

सामंत विभिन्न प्रकार के होते थे। गाँवों में छोटे–छोटे मेनरों के स्वामी को श्एक्वारश कहा जाता था और सामन्तों में सबसे बड़ा श्काउण्टश था। परन्तु कुलीनता की दृष्टि से देखने पर सभी सामंतों का संबंध अभिजात वर्ग से था। सामंत शक्तिशाली, परिश्रमी और युद्धकला तथा आखेट में प्रवीण होते थे। वे शिष्टाचारी एवं अनुशासन प्रिय होते थे। यही विशेषताएं उन्हें प्रशासन में प्रमुख स्थान देती थीं।

एक समय ऐसा आया जब सामंतों की स्थिति राजा की तरह हो गई। उनकी अपनी अदालत होती थी जहाँ वे किसानों के मुकदमों का फैसला किया करते थे। उनकी अपनी सेना होती थी जो उनके मेनरों एवं लागों की सुरक्षा करती थी। छोटे सामंतों की तुलना में बड़े सामंतों के पास अधिक जमीन हुआ करती थी। सामंतों के बीच लड़ाई–झगड़े आम बात थी। राजाओं की तरह सामंत भी किसानों से कर वसूलते थे तथा उनकी सेवा में पादरी, गुलाम, लिपिक, सेवक आदि लोग रहते थे। बड़े सामंत विशाल एवं भव्य किलों में निवास करते थे। प्रायः सभी सामंत कीमती एवं रंगीन वस्त्र धारण करते थे एवं आभूषण पहनते थे। आर्थिक दृष्टि से मजबूत हो जाने की वजह से ये लोग व्यभिचारी तथा विलासप्रिय हो गये थे और उनमें बहुत सारी बुराइयों ने घर कर लिया था। अपने शारीरिक तथा आर्थिक शक्ति के बल पर सामंत वर्गी लोग समाज तथा प्रशासन को गहरे रूप से प्रभावित करते थे। समाज तथा देश के वे रक्षक माने जाते थे। सामान्य रूप से इस वर्ग का जीवन विलासी हो गया था। इस वर्ग के लोगों का जीवन काफी कष्ट में बीतता था। वे केवल सेवक थे तथा पदरी एवं सामंतो को कर भी देते थे।

मध्यकालीन यूरोप में कृषि कार्य की महत्त थी। यूरोप की सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था कृषि पर ही आधारित थी। रोटी, मांस, ऊन, लकड़ी, कोयला तथा चमड़ा जिनकी आवश्यकता सारे यूरोप को थी। गाँवों से ही आते थे। किन्तु दुर्भाग्य की बात यह थी कि सभी वस्तुओं को उपलब्ध कराने वाला किसान स्वयं काफी अभावपूर्ण जीवन व्यतीत करता था। लोग इसे विधि का विधान मानते थे और किसी पर भी इस प्रकार की असमानताओं का कोई भी असर नहीं होता था।

किसानों की सामाजिक स्थिति कुछ खास नहीं थी। लोग मानते थे कि ''किसान का माथा ऐसा वज्र होता है कि उसमें किसी विचार का प्रवेश हो ही नहीं सकता है।'' इसी प्रकार किसानों के सम्बन्ध में एक अन्य धारणा यह थी कि ''शारीरिक दुर्गंध के कारण उन्हें नर्क में भी प्रवेश दुर्लभ है।'' उनके विषय में कहा जाता था कि ''वर्षा छोड़ अन्य किसी प्रकार का जल उनके चेहरे को नहीं छूता था, सुगंध से वह बेहोश हो जाते थे और केवल गोबर से ही वे होश में आते थे।'' किसानों का ज्ञान से दूर–दूर तक कोई सम्बन्ध नहीं था। पादरी उन्हें गँवार पशु की संज्ञा दे रखे थे।

निष्कर्ष

मध्यकालीन यूरोप में दास कृषिकों की हालत अत्यधिक चिन्ताजनक थी। वे स्वामी की अनुमति के बिना कहीं आ जा नहीं सकते थे। सबसे बड़ी बात यह थी कि जब भूमि की बिकी होती थी तब उनके साथ उस भूमि से सम्बन्धित किसान को भी बेच दिया जाता था। जिस प्रकार वह भूमि से बँधा हुआ था। उसे शिक्षा ग्रहण करने का अधिकार प्राप्त नहीं था। कम्मी अपने मन से न तो विवाह कर सकते थे और न ही विवाह के बाद स्वतंत्रतापूर्वक अपनी पत्नी से मिलने जा सकते थे। एक स्वतंत्र परिवार में विवाह करके मुक्ति पा सकता था। वह अपने कार्यभारों एवं आर्थिक दायित्वों से दबा रहता था। स्वतंत्र किसान भी कर्ज के बोझ से लदे हुए थे। कृषि में और संलग्न श्रमिक और शिल्पियों का जीवन भी कृषकों की भाँति अत्यधिक नीरस था और इन लोगों का उच्च वर्गों द्वारा काफी शोषण भी किया जाता था। उल्लिखित सामाजिक विषमताओं से मध्यकालीन यूरोपीय समाज का अवलोकन कराना, वर्तमान को प्रकाशित करना तथा उज्जवल भविष्य के लिए दिशा निर्देश करना है। इतिहासकार की इस निरन्तर प्रक्रिया से ही इतिहास का उद्भव तथा विकास होता है।

संदर्भ सूची

1. पॉलिटिकल हिस्ट्री ऑफ ऐंशियेंट इण्डिया, कलकत्ता, 1932
2. ऐलीमेन्टस ऑन हिन्दू इकैमोग्राफी, मद्रास, 1914
3. हिस्टौरिकल ग्रीनिक, कलकत्ता, 1962
4. इंडिया ऐज डिस्क्राइब्ड इन अर्ली टैक्सट्स ऑफ बुद्धिज्म एण्ड जैनिज्म, लन्दन, 1941
5. इस्लामिक स्टडीज, कलकत्ता, 1931
6. ट्राइब्स इन ऐलिमेंट इंडिया, पूना, 1943
7. हिन्दू सोशल इंस्टिच्यूशनल, बम्बई, 1938
8. हिस्ट्री ऑफ इंडियन लिटरेचर, भाग–2, कलकत्ता, 1933
9. ऐंशिएंट हिस्टॉरिकल ट्रैडीशन, लन्दन, 1922
10. द सोशल ऑर्गनाइजेशन इन नार्थ इस्ट इण्डिया इन बुद्धिज टाइम, कलकत्ता, 1920
11. ऐंशियेंट पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन, 1916